UPCISS

TALLY -ERP9

Free Online Computer Classes on
YouTube Channel **UPCISS**
www.youtube.com/upciss

UPCISS

YouTube UPCISS Subscribe

Tally. ERP 9

Tally is a financial accounting software package. It is a complete business accounting and inventory management software that provides various facilities like Government supported formats, multilingual operations, processing for small and medium businesses in India. Tally products are transforming businesses across industry in over 100 Countries. Latest version is Tally. ERP 9.

Account

Profit, Loss, Purchases, Sales, Ram, Mohan, Bank, Cash, Computer, Machinery, Furniture, Assets, Deposit, Interest, Discount, Wages Etc.

Classification Of Account

1-Personal Account
2-Real Account
3-Nominal Account

1-*Personal Account:-*

वह खाते जो किसि व्यक्ति या संस्था के नाम से बनाए जाते है, वे **Personal Account** (व्यक्तिगत खाते) कहलाते है। जैसे– Mohit, Rahul, Bank, Abc Company, Capital, Drawing etc.

2-*Real Account:-*

वह खाते जो किसि वस्तु या सम्पत्ति आदि से सम्बन्धित होते हैं **Real Account** (वास्तविक खाते) कहलाते हैं। जैसे– Cash, Computer, Machinery, Furniture, Assets etc.

3-*Nominal Account:-*

वह खाते जो लाभ–हानि, आय–व्यय, और क्रय–विक्रय से सम्बन्धित होते हैं **Nominal Account** (नाममात्र के खाते) कहलाते हैं। जैसे– Interest, Discount, Wages, Purchases, Sales, Profit & Loss etc.

Rules of Accounting

Personal Account		
1-Who is receiver	(पाने वाला)	***Debit***
2-Who is given	(देने वाला)	***Credit***
Real Account		
3-What come in	(आने वाला)	***Debit***
4-What goes it	(जाने वाला)	***Credit***
Nominal Account		
5-Loss & Expenses	(हानि, खर्चा)	***Debit***
6-Profit & Income	(लाभ, आय)	***Credit***

TALLY GROUP

PRIMARY GROUP

1- Capital Account
2- Loans Liabilities
3- Current Liabilities
4- Fixed Assets
5- Investment
6- Current Assets
7- Miscellaneous Expenses (Assets)
8- Suspense Account
9- Branch Division
10- Sales Account
11- Purchase Account
12- Direct Income
13- Direct Expenses
14- Indirect Income
15- Indirect Expenses

SECONDRY GROUP

16-	Reserve & Surplus	(Capital Account)
17-	Bank Over Draft	(Loans Liabilities)
18-	Secured Loans	(Loans Liabilities)
19-	Unsecured Loans	(Loans Liabilities)
20-	Duties & Tax	(Current Liabilities)
21-	Provision	(Current Liabilities)
22-	Sundry Creditors	(Current Liabilities)
23-	Sundry Debtors	(Current Assets)
24-	Deposit Assets	(Current Assets)
25-	Loans & Advance Assets	(Current Assets)
26-	Cash in Hand	(Current Assets)
27-	Stock in Hand	(Current Assets)
28-	Bank Account	(Current Assets)

1- ***Capital Account:-***

सभी प्रकार के पूँजी खाते (जब व्यापार आरम्भ करते है) Capital Account के अन्तर्गत खोले जाते है। जैसे– राम ने 10000 से व्यापार आरम्भ। (Ram is a Capital A/c)

2- ***Loans Liabilities:-***

व्यापार द्वारा लिए गए ऋण व्यापार का दायित्व है। इस प्रकार के खाते Loans Liabilities के अन्तर्गत बनाए जाते है। जैसे– राम ने अपने मकान को गिरवी रख कर 10000 का राहुल से लोन लिया।
(Rahul is a Loans Liabilities)

3- ***Current Liabilities:-***

चालू दायित्व के खाते Current Liabilities के अन्तर्गत खोले जाते है। जैसे–अग्रिम लिया हुआ ऋण, विविध लेनदार।
राम ने राहुल से 5000 का Computer उधार खरीदा ।
(Rahul is a Current Liabilities (Sundry Creditors))

4- ***Fixed Assets:-***

सभी प्रकार की स्थायी सम्पत्तियों के खातें Fixed Assets के अन्तर्गत बनाए जाते है। जैसे–भवन, मशीनरी, प्लाट आदि। राम ने 10000 का सेल फोन खरीदा।
(Cell Phone is a Fixed Assets)

5- ***Investment Account:-***

किसी भी प्रकार के विनियोग किए गए खाते Investment Account के अन्तर्गत बनाए जाते है। जैसे–लाभांश खाते, विनियोग खाते, अंश खाते आदि।

6- ***Current Assets:-***

सभी प्रकार की चालू सम्पत्तियों के खाते Current Assets के अन्तर्गत खोले जाते है। जैसे–रोकड़ खाता, बैंक खाता, देनदार खाता, अग्रिम खाता आदि।

7- ***Miscellaneous Exp. Assets:-***

यह कई प्रकार के खर्चे होते है, जो प्रारम्भ में अतिरिक्त व्यय के रुप में किए जाते है।

8- ***Suspense Account:-***

जब बैलेन्स सीट का योग बराबर न आ रहा हो तब उस समय अन्तर की धनराषि Suspence Account में डाल देते हैं।

9- ***Branch Division:-***

Main company के द्वारा बनाये गए अपने ब्रांच के खाते Branch Division के अन्तर्गत आते है।

10- ***Sales Account:-***

सभी प्रकार के विक्रय माल के खाते Sales Account के अन्तर्गत बनाए जाते है, चाहे वह उधार हो या नगद।

11- ***Purchase Account:-***

सभी प्रकार के क्रय किए गए माल के खाते Purchase Account के अन्तर्गत बनाए जाते है, चाहे वह उधार हो या नगद।

12- ***Direct Income:-***

सभी प्रकार के प्रत्यक्ष आय जो व्यापार से आती है, वह Direct Income में दर्शायी जाती है।

13- ***Direct Expenses:-***

व्यापार में जो प्रत्यक्ष रुप से व्यय किए गए है, उनके खाते Direct Expenses के अन्तर्गत आते है।

14- ***Indirect Income:-***

सभी प्रकार के अप्रत्यक्ष आयों के खातें Indirect Income के अन्तर्गत बनाए जाते है, जैसे—प्राप्त किराया, प्राप्त छूट, प्राप्त कमीशन आदि।

15- ***Indirect Expenses:-***

सभी प्रकार के अप्रत्यक्ष व्ययों के खाते के Indirect Expenses अन्तर्गत बनाए जाते है, जैसे— कमीशन खाता, व्यय खाता, किराया खाता, आदि।

16- ***Reserve & Surplus:-***

लाभ से बनाए जाने वाले कोश के खाते Reserve & Surplus में बनाए जाते है, जैसे– पूंजी कोश, पूंजी शोधन कोश आदि।

17- ***Bank Over Draft:-***

जब बैंक जमा से अधिक राशि देने लगे तो उसको Bank Over Draft कहते है। (जब बैंक से लोन लेते हैं)

18- ***Secured Loans:-***

सभी प्रकार के सुरक्षित ऋण के खाते Secured Loans के अन्तर्गत बनाए जाते है।

19- ***Unsecured Loans:-***

सभी प्रकार के असुरक्षित ऋण जिनका कोई कानूनी प्रारुप न हो उनका खाता Unsecured Loans के अन्तर्गत बनाए जाते है।

20- ***Duties & Tax:-***

सभी प्रकार के करों के खाते Duties & Tax के अन्तर्गत बनाए जाते है।

21- ***Provision:-***

सभी प्रकार के किए गए प्रावधान के खाते Provision के अन्तर्गत बनाए जाते है, जैसे– वेतन के लिए प्रावधान, किराए के लिए प्रावधान।

22- ***Sundry Creditors:-***

भविष्य में जिनको पैसा देना होता है वे लेनदार होते है, उनके खाते Sundry Creditors के अन्तर्गत बनाए जाते है।

22- ***Sundry Debtors:-***

भविष्य में जिनसे पैसा लेना होता है वे हमारे देनदार होते है, उनके खाते Sundry Debtors के अन्तर्गत बनाए जाते है।

24- ***Deposit Assets:-***

किसी वस्तु के लिए Security के रुप में पैसा जमा करना Deposit Assets कहलाता है, जैसे– दुकान के लिए 2,0000 जमा किए।

25- ***<u>Loans & Advance Assets :-</u>***

सभी प्रकार की अग्रिम दी हुयी धनराषि Loans & Advance Assets के अन्तर्गत आती है।

26- ***<u>Cash in hand</u>:-***

यह ग्रुप Cash के लिए इस्तेमाल होता है।

27- ***<u>Stock in hand</u>:-***

यह ग्रुप Stock के लिए होता है।

28- ***<u>Bank Account</u>:-***

सभी प्रकार के Banks के खाते Bank Account में खोले जाते है, जैसे– ICICI Bank, State Bank, HDFC Bank.

Types of Voucher

1-	**Contra Voucher**	**F4**
2-	**Payment Voucher**	**F5**
3-	**Receipt Voucher**	**F6**
4-	**Journal Voucher**	**F7**
5-	**Sales Voucher**	**F8**
6-	**Purchase Voucher**	**F9**
7-	**Credit note Voucher**	**Alt+F8**
8-	**Debit note Voucher**	**Alt+F9**
9-	**Reserve & Surplus**	**F10**
10-	**Memorandum Voucher**	**Alt+F10**

1- ***Contra Voucher:-***

जो खाते Cash या Bank से सम्बन्धित होते है जब बैंक में रुपये जमा करें या निकाले तो उसकी प्रविष्टि को Contra Voucher पर करते है, जैसे–50,000 बैंक में जमा किए।

2-***Payment Voucher:-***

जब किसी व्यक्ति को Cash में या Cheque के रुप में भुगतान किया जाता है, तो उसकी प्रविष्टि Payment Voucher में करते है, जैसे– राम को 50,000 का भुगतान किया।

3- ***Receipt Voucher:-***

जब किसी के द्वारा धन कमीशन छूट आदि, प्राप्त करते है, तो उसकी प्रविष्टि Receipt Voucher पर करते है, जैसे–राम को 5000 की नगद income हुयी।

4- ***Journal Voucher:-***

जब बात उधार की आती है, चाहे वह उधार दिया गया हो या लिया गया हो तथा प्रावधान आदि कि प्रविष्टि Journal Voucher पर करते है, जैसे– राहुल ने राम से 50,000 का फर्नीचर उधार खरीदा।

5- ***Sales Voucher:-***

सभी प्रकार के स्टाक का नगद व उधार विक्रय का लेखा Sales Voucher पर किया जाता है, जैसे–श्याम ने 10,000 की Light बेची।

6- ***Purchase Voucher:-***

सभी प्रकार के उधार व नगद क्रय की प्रविष्टि Purchase Voucher पर की जाती है, जैसे– राम ने राहुल से 50,000 का माल उधार खरीदा।

7- ***Credit Note Voucher:-***

जब बिका हुआ माल वापस आता है तो उसकी प्रविष्टि Credit Note Voucher पर करते है, जैसे–राम से 2,000 का माल वापस आया। (Sales Return)

8- ***Debit Note Voucher:-***

सभी प्रकार की क्रय वापसी (खरीदे हुये माल की वापसी) की प्रविष्टि Debit Note Voucher पर की जाती है, जैसे– राम ने राहुल को 2,000 का माल वापस किया। (Purchases Return)

9- ***Memorandum Voucher:-***

जो प्रविष्टि याद रखने के लिए होती है, तो उसकी प्रविष्टि Memorandum Voucher पर करते है।

10- ***Reserve & Surplus:-***

सभी प्रकार के लाभ से बनाए जाने वाले कोश के खातो की प्रविष्टि Reserve & Surplus में की जाती है।

(Terminology of Accounting)

- **व्यापार (Trade)**

  लाभ कमाने के उदेश्य से किया गया वस्तुओं का क्रय, विक्रय व्यापार कहलाता है।

- **पेशा (Profession)**

  आय अर्जित करने के लिए किया गया कोई भी कार्य या साधन जिसके लिए पूर्व प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है,पेशा कहलाता है।

- **व्यवसाय (Business)**

  ऐसा कोई वैधानिक कार्य जो आय या लाभ प्राप्त करने के उदेश्य से किया गया हो व्यवसाय कहलाता है। व्यापार व पेशा भी इसी के अन्तरगत आते है।

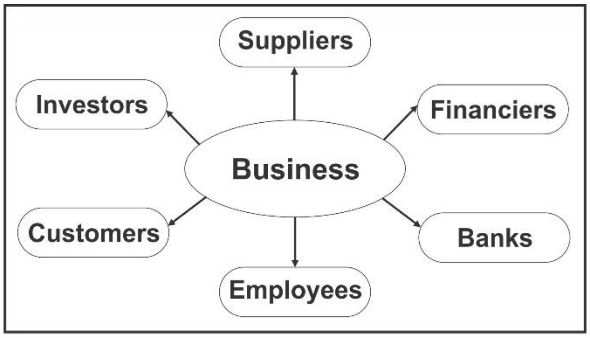

Parties dealt with in a business process

- **मालिक (Owner)**

  वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जो व्यापार में आवश्यक पूँजी लगाते हैं व्यापार का संचालन करते हैं , व्यापार की जोखिम सहन करते हैं , तथा लाभ व हानि के अधिकारी होते हैं वे व्यापार के मालिक कहलाते हैं।

यदि किसी व्यापार का मालिक एक व्यक्ति है तो वह Proprietor कहलाता है। यदि 2 या 2 से अधिक व्यक्ति हैं तो वह Partner कहलाते हैं। और यदि बहुत से लोग मिलकर संगठित रुप से कार्य करते हैं तो Shear Holder कहलाते हैं।

- **पूँजी (Capital)**

व्यापार का मालिक जो रुपया ,माल या सम्मपत्ति व्यापार में लगाता है उसे पूँजी कहते हैं । व्यापार में लाभ होने पर पूँजी बढ़ती है और हानि होने पर पूँजी घटती है।

- **आहरण (Drawings)**

व्यापार का मालिक अपने निजी खर्च के लिये समय–समय पर व्यापार से जो रूपया या माल निकालता है वह उसका आहरण कहलाता है।

- **माल (Goods)**

माल उस वस्तु को कहते हैं जिसका क्रय–विक्रय या व्यापार किया जाता है, माल के अन्तरगत वस्तुओं के निर्माण हेतु प्राप्त कच्ची सामग्री, अर्ध निर्मित सामग्री, या तैयार वस्तुयें हो सकती है।

- **क्रय (Purchase)**

विक्रय के उदेश्य से व्यापार में खरीदा गया माल क्रय या खरीदी कहा जाता है। व्यापार में माल उधार या नगद खरीदा जा सकता है।

- **विक्रय (Sales)**

जो माल बेचा जाता है उसे विक्रय कहते है।

- **क्रय वापसी (Purchase Return)**

जब खरीदे हुये माल से कुछ माल विभिन्न कारणों से वापस कर दिया जाता है तो उसे क्रय वापसी कहते हैं।

- **विक्रय वापसी (Sales Return)**

जब बेचे हुये माल का कुछ भाग विभिन्न कारणों से व्यापारी लौटा देता है तो इस प्रकार की वापसी को विक्रय वापसी कहते हैं।

- **रहतिया (Stock)**

किसी भी व्यवसाय में वर्तमान में हमारे पास किसी भी मात्रा में जो माल उपलब्ध है Stock कहालाता है। साल के अन्त में जो माल बिना बिके रह जाता है वह हमारा Closing Stock कहलाता है , और अगले साल के पहले दिन वही माल Opening Stock कहलाता है।

- **दायित्व (Liabilities)**

वे सब ऋण जो व्यापार को अन्य व्यक्तियों अथवा अपने मालिक के प्रति चुकाने होते है, दायित्व कहलाते हैं। ये दायित्व दो प्रकार के होते हैं।

1–स्थायी दायित्व (Long Term/Fixed Liabilities)

ये वो दायित्व हैं जो एक साल से ज्यादा समय के बाद या व्यापार समाप्ति पर चुकानी होती है, Fixed Liabilities कहलाती है।

2–चालू दायित्व (Short Term/Current Liabilities)

ये वो दायित्व हैं जो एक साल ,6 महीने या उससे भी कम समय में चुकानी होती हैं , Current Liabilities कहलाती है।

- **सम्पत्ति (Assets)**

व्यापार में समस्त वस्तुयें जो व्यापार संचालन में सहायक होती हैं सम्पत्ति कहलाती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं–

1–अचल/स्थायी सम्पत्ति– (Fixed Assets)

वे वस्तुयें जो व्यापार को चलाने के लिये स्थायी रूप से खरीदी जाती हैं और जिन्हें बेचने के लिये नही खरीदा जाता है, वे सभी सम्पत्तियाँ स्थायी सम्पत्तियाँ कहलाती है।

2–चल/अस्थायी सम्पत्ति– (Current Assets)

ये वे सम्पत्तियाँ हैं जो स्थायी रूप से व्यापार में नहीं रहती हैं। Cash, Bank में जमा धन, Stoke व Debaters तथा वे सभी सम्पत्तियाँ जो आसानी व शीघ्रता से नगदी में परिवर्तित की जा सके अस्थायी सम्पत्ति कहलाती है।

- **व्यय (Expenses)**

माल को उत्पादन व उसे बेचने में जो खर्चे होते हैं, वे Expenses कहलाते हैं। ये मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं–

1–प्रत्यक्ष व्यय– (Direct Expenses)

ये वे खर्चे होते हैं जिन्हे व्यापारी माल खरीदते वक्त करता है, या माल के उत्पादन में करता है। उत्पादन की दशा में कच्चे माल की खरीद से लेकर उसे विक्रय योग्य स्थिति तक लाने में जो खर्चे होते हैं वो Direct Exp. कहलाते हैं।

2–अप्रत्यक्ष व्यय– (Indirect Expenses)

Indirect Exp. वे Exp. होते हैं जिनका सम्बन्ध वस्तु के क्रय या उसके निर्माण से न होकर बल्कि कार्यालय से सम्बन्धित किये गये व्यय से होता है, ऐसे Exp. का प्रभाव विक्रय किये जाने वाले माल के लागत पर बिल्कुल नही होता, ये व्यापार के लाभ को घटा देते हैं।

- **राजस्व (Revenue)**

Goods व Serves को Market में Sale करने पर उससे जो प्राप्ति होती है, वह Revenue कहलाती है।

- **आय (Income)**

Goods व Serves को Market में Sale करने पर उससे जो Revenue होती है उसे हम Income कहते हैं। यह दो प्रकार की होती है

1–प्रत्यक्ष आय– (Direct Income)

Direct Income वो Income है जो हमें मुख्य व्यवसाय से मिलती है।

2–अप्रत्यक्ष आय– (Indirect Income)

Indirect Income वो Income है जो हमें मुख्य व्यवसाय से नही मिलती बल्कि Discount, Interest से मिलती है, Indirect Income होती है।

■ बट्टा छूट (Discount)

व्यापारी द्वारा अपने ग्राहकों को दी जाने वाली रियायत, छूट या Discount कहलाती है। यह दो प्रकार की होती है–

1–व्यापारिक बट्टा– (Trade Discount)

व्यापारी माल बेचते समय ग्राहक को माल के मूल्य में कुछ कमीं या बिल की राशि में जो कमीं करता है वह व्यापारिक छूट कहलाती है। यह छूट माल के विक्रय मूल्य में से कुछ निष्चित प्रतिशत के रूप में दी जाती है, इस छूट को बिल में ही कम कर दिया जाता है, उसे Trade Discount कहा जाता है।

2–नगद बट्टा– (Cash Discount)

व्यापारी चलन के अनुसार प्रत्येक ग्राहक को एक निश्चित अवधि में भुगतान करने की सुविधा प्रदान की जाती है, अगर ग्राहक निश्चित अवधि के पहले ही भुगतान कर दे तो उसे कुछ छूट दी जाती है, जिसे Cash Discount कहा जाता है।

यह Discount की प्रतिशत के रूप में दिया जाता हैं।

■ डूबत ऋण (Bad Debts)

व्यापारी को उधार बेचे गये माल की पूरी रकम Debaters (देनदार) से प्राप्त हो जाये ये आवश्यक नही है, अतः इस उधार की रकम में से जो वसूल नही हो पाती है उसे व्यापारी का डूबत ऋण कहते है।

■ लेन–देन (Transaction)

व्यापार में माल सम्बन्धी क्रय विक्रय और वस्तुओं का पारस्परिक आदान–प्रदान होता है, ऐसे सभी लेन–देन मुद्रा में होते हैं। यह मुद्रा द्वारा मापे जाते हैं मुद्रा का भुगतान तुरन्त या भविष्य में हो सकता है। व्यापारी द्वारा किये जाने वाले सभी आदान–प्रदान, लेन–देन कहलाते हैं। जब सौदे का तुरन्त भुगतान किया जाता है तब वह नगद लेन–देन (Cash Transaction) कहलाता हैं।

जब भुगतान भविष्य में किया जाता है तो उसे उधार लेन–देन यानी (Credit Transaction) कहते है।

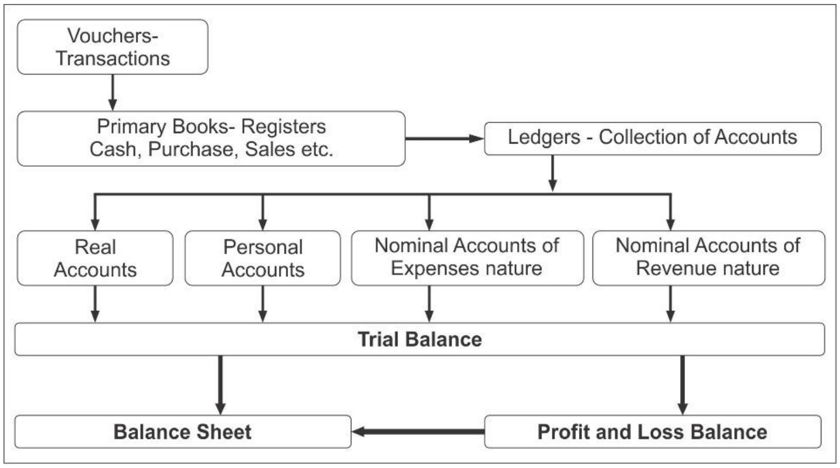

Double Entry System

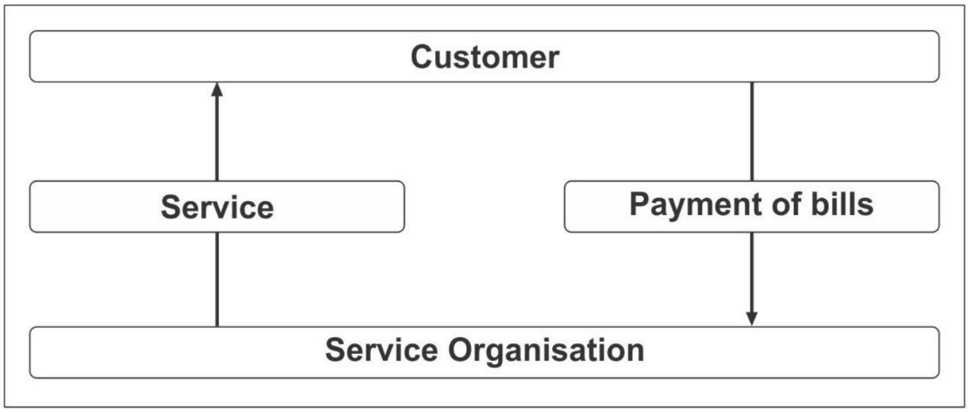

Business Process in a Service Organisation

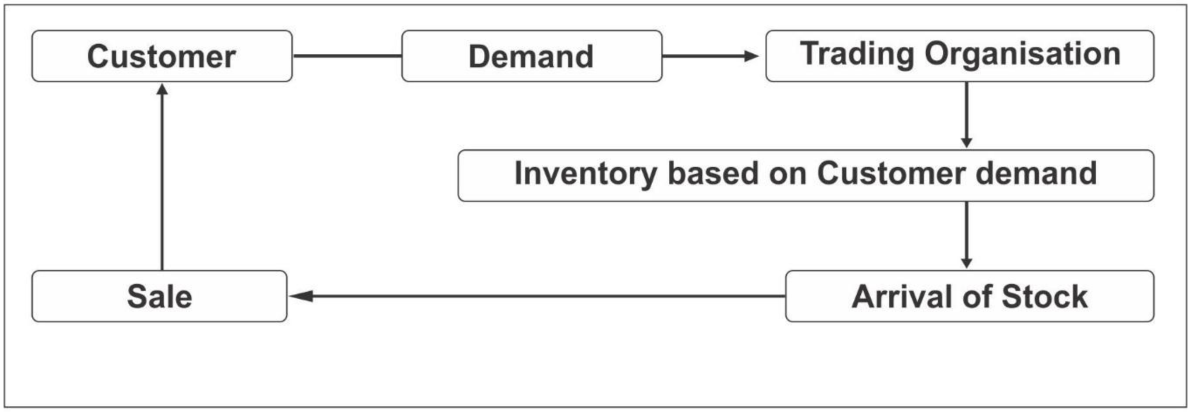

Business Process in a Trading Organisation

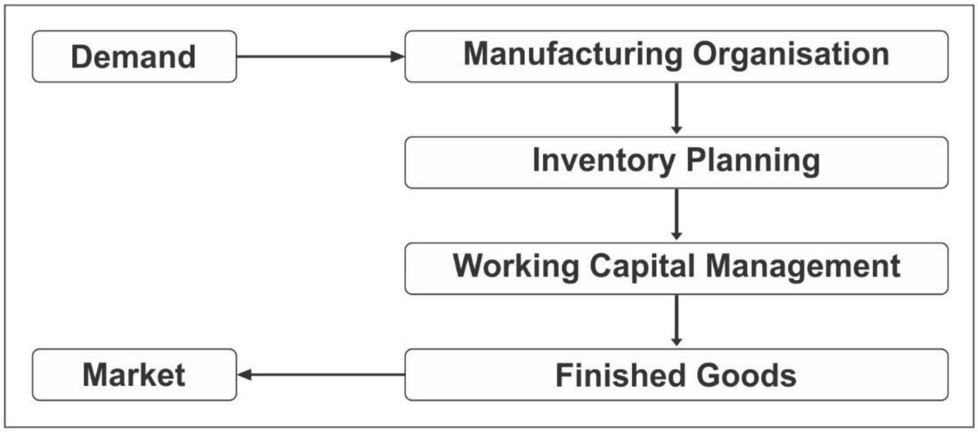

Business Process in a Manufacturing Organisation

Inventory Control

Inventory का अर्थ है वस्तुओं की सूची। एक संगठन में वस्तुएँ जैसे- Row Material, Finished Product, Consumable आदि को Stock में रखा जाता है, जिससे जब भी आवश्यकता पड़े, तो ये Item Self में उपलब्ध हों और इन Items की अनुपलब्धता की वजह से Business प्रभावित न हो। एक Business तब तक लाभकारी नही हो सकता है, जब तक कि इसमें वस्तुओं के आने और जाने का विस्तृत हिसाब–किताब न रखा जाए।

एक अच्छे Inventory Control System के मुख्य उद्देश्य हैं–

1. Inventory पर किए गए निवेश को न्यूनतम रखना, जिससे उधार न लेना पड़े और ब्याज से होने वाले नुकसान को बचाया जा सके।
2. यह सुनिश्चित करना की Store में जब, जहाँ जैसी जरूरत पड़े तो Item उपलब्ध रहें।
3. अधिक Stoke रखने, वस्तुओं के सड़ने अथवा पुरानी हो जाने की वजह से होने वाले नुकसान को कम किया जाना।
4. Production की लागत एवं उपकरणों की देखभाल पर आने वाले खर्च को Maintain करने एवं कम करने के लिए संसाधनों को उत्कृष्ठ बनाना।
5. Costing एवं Accounting कारणों से सही Recordings को Maintain करना।

इसलिए यह जरूरी है कि सभी संगठनो में एक अच्छा Inventory Control System होना चाहिए और इस लक्ष्य को प्राप्त करने में Computer आपकी काफी मदद करते हैं।

Financial System

Financial System वो System होते हैं जो विभिन्न संगठनो या व्यक्तियों को पैसों का लेनदेन करने में ही Deal करते हैं। इन्हे Financial Accounting तथा Management Accounting दो भागों में बाँटा जा सकता है। Financial Accounting, Financial Statement जैसे– Balance Sheet, Profit / Loss Account आदि तैयार करती है, जबकि Management Accounting Finance की Time से सूचना देता है जिससे Manager अपना कार्य कुशलता से कर सके।